१८ - सदैव के लिए चिन्हित

1

पशु की छाप प्राप्त करने से कैसे बचें

2

यह एक विशेष दिन था; एक महान दिन जो विशेष उत्सव के लिए शाही बैंड -बाजे के साथ एकत्र होने का दिन था। राजा नबूकदनेस्सर उतेजित था।

3

उसने समस्त विस्तृत बाबुल साम्राज्य से उच्च पदाधिकारियों को बुलाया था। यह वह दिन था जिसकी वह तीव्र उत्सुकता से प्रतिक्षा कर रहा था और ऐसा दिन जिसे वह जीवन भर कभी भुला न सकेगा।

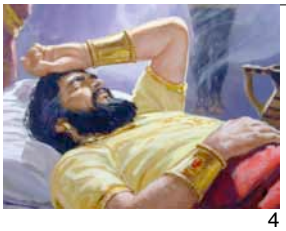
4

कुछ समय पहले राजा ने एक विचित्र स्वप्न देखा था। उसने धातु की एक विशाल मूर्ति देखी थी।

5

पर दूसरे दिन वो याद ना कर सका कि उसका स्वप्न क्या था, इसलिए दानिय्येल को अर्थ के साथ - साथ राजा को उसका स्वप्न भी बताना पड़ा। नबुकदनेस्सर अपने स्वप्न के अलावा और कुछ सोच नहीं पा रहा था।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

6

वह सोने का सिर था!
उसका राज्य संसार में अद्वितीय था!
अब प्रत्येक व्यक्ति देखेगें की बाबुल वास्तव में कितना महान था और वह स्वयं कितना महान था -का सजीव प्रदर्शन!

7

यह एक विशेष दिन था; एक महान दिन जो विशेष उत्सव के लिए शाही बैंड -बाजे के साथ एकत्र होने का दिन था। राजा नबूकदनेस्सर उतेजित था।

8

यह मूरत पूरी सोने की थी केवल सिर ही नहीं किन्तु पूरी देह भी। हर कोई शोभायमान मूरत की चौंकने वाली सूरत को देखकर चकित था। संसार पर यह प्रकट करने के लिए राजा का तरीका था कि उसका राज्य सदा बना रहेगा।

9

इसदिन राजा के साम्राज्य के हजारों महत्वपूर्ण अधिकारी नबूकदनेस्सर की सोने की मूरत के समर्पण को देखने के लिए एकत्र हुए।

10

अचानक विशाल भीड़ पर एक शान्ति छा गई।
तुरहियाँ बजीं, और राजा के प्रतिनिधि ने ऊंचे शब्द से घोषणा की,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

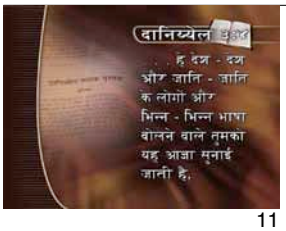

11

(मूलपाठ : दानिय्येल ३ : ४ -६)

दानिय्येल ३ : ४ -६

"---हे देश -देश और जाति -जाति के लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले तुमको यह आज्ञा सुनाई जाती है,

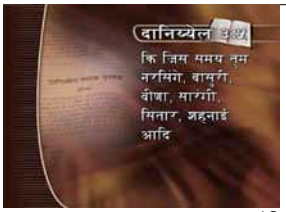

12

कि जिस समय तुम नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि

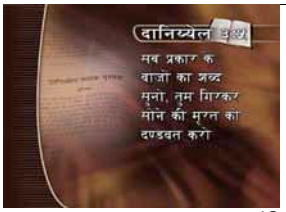

13

सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, तुम गिरकर सोने की मूरत को दण्डवत करो

14

जो नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई है;

15

और जो कोई गिरकर दण्डवत न करेगा

16

वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिया जाएगा।"

दानिय्येल ३ : ४ -६

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

17

संगीत बजा। सब लोगों ने नीचे गिरकर मूरत को दण्डवत किया।

लगभग सब लोगों ने।

18

घुटनों पर झुकी विशाल भीड़ में तीन यहूदी -शद्रक, मेशक और अबेदनगो खड़े थे जिन्होंने मूरत के सामने झुकने और दण्डवत करके परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना स्वीकार नहीं किया। यह समाचार शीघ्र ही राजा तक पहुँच गया।

19

(दृश्य)

कोई उसके सीधे आदेश को तुच्छ जानने का साहस कर सकता था इससे क्रोधित होकर नबूकदनेस्सर ने अपराधियों को उसके सामने लाने का आदेश दिया।

20

(दृश्य)

राजा ने जैसे ही तीनो यहूदियों को देखा, उसने उन्हें तुरन्त पहचान लिया।

वे असामान्य युवक थे, जो महान ज्ञान और अनेक गुणों से सम्पन्न थे।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

21

(दृश्य)

उसने बीते दिनों में उन्हें अनेक उत्तरदायित्व सौंपे थे जो उन्होंने ईमानदारी और कुशलता से पूरे किये थे। उनके लिए कुछ दया का भाव रखते हुए उसने उन्हें दूसरा अवसर देने का निश्चय किया।

उनमें से प्रत्येक को नाम से पुकार कर राजा ने कहा,

22

(मूलपाठ : दानिय्येल ३ : १५)

"यदि तुम अभी तैयार हो कि जब सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो,

23

और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत करो, तो बचोगे! किन्तु यदि तुम दण्डवत न करो,

24

तो उसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जाओगे।"

दानिय्येल ३ : १५

एक बार जब राजा घोषणा कर दी तो उसे पूरा करना था अन्यथा उसे सब लोगों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

25

शद्रक, मेशक और अबेदनगो विशाल भट्टे से निकलती ज्वालाओं को देख सकते थे। राजा के इरादे के विषय में कोई सन्देह नहीं हो सकता था।

26

वे क्या करें? आप क्या करते?

क्या वे परमेश्वर की सीधी आज्ञा का उल्लंघन करें?

ओह! यह तर्क देना आसान रहा होता कि इन परिस्थितियों में केवल एक बार मूरत को दण्डवत करना कोई हानिकारक नहीं होगा। सोचा जाये तो उनके जीवन दाव पर थे! क्या राजा का सम्मान करना महत्वपूर्ण नहीं रहा होगा?

27

स्पष्टतया ऐसे विचार उनके मन में कभी नहीं आए, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाकारिता उन्हें बचपन से सिखाई गई थी और उनमें से एक आज्ञा कहती थी,

28

(मूलपाठ : निर्गमन २० : ४, ५)

"तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना न किसी की प्रतिमा बनाना ---

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

29

तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना ---"

निर्गमन २० : ४,५

शान्तिपूर्वक नि:संकोच उनका उत्तर आया :

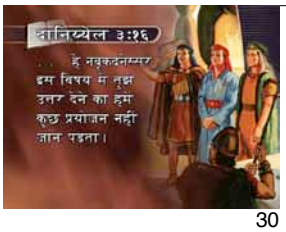

30

(मूलपाठ : दानिय्येल ३ : १६ -१८)

"---हे नबूकदनेस्सर इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।"

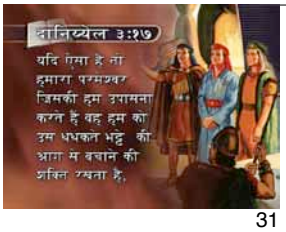

31

यदि ऐसा है तो हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है,

32

वरन हे राजा वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।

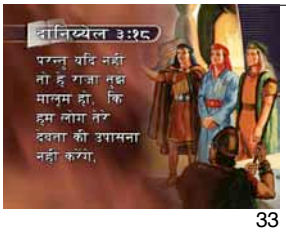

33

परन्तु यदि नहीं तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

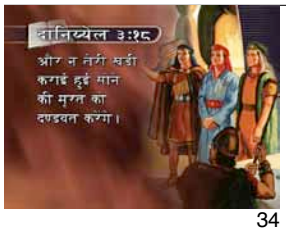

34

और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे।"

दानिय्येल ३ : १६ -१८।

कहानी का शेष भाग उत्तेजनापूर्ण है। राजा बहुत क्रोधित हुआ और आदेश दिया कि भट्टे को सामान्य से सात गुणा अधिक धधकायी जाए।

35

तब राजा ने आज्ञा दी कि शद्रक, मेशक और अबेदनगों को बांधकर उन्हें धधकते हुए भटटे में डाल दो।
आग इतनी तीव्र थी कि सिपाही जिन्होंने उन तीनों जवानों को आग में फेंका जल मरे।

36

अचानक राजा अपने पैरों पर भटटे के द्वार की ओर दौड़ते हुए जो कुछ उसने देखा अपने सलाहकारों से चिल्लाकर कहा कि चार पुरुष ज्वालाओं के बीच टहल रहे है और चौथे का स्वरूप परमेश्वर के पुत्र के समान था!

37

हमारा प्रभु धधकते भट्टे में प्रवेश कर गया। वह तीन यहूदियों के साथ ज्वालाओं के बीच में था। वह सर्वशक्तिमान छुड़ाने वाला है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

38

नबूकदनेस्सर ने उन यहूदियों को भटटे से बाहर आने की आज्ञा दी और प्रत्येक अत्यधिक आश्चर्यचकित था कि न तो उन तीनों के सिर का कोई बाल ही झुलसा और न ही उनके वस्त्रों से धुए की गन्ध ही पाई गई! सोने की विशाल मूरत भूला दी गयी। उसदिन के समाचारों का शीर्षक और आने वाले कई वर्षो तक उन तीन जवानों का आश्चर्यजनक अनुभव ही रहा होगा।

39

उनके परमेश्वर ने उन्हें ज्वालाओं से बचा लिया था! उसके विश्वास योग्य अनुयायियों के लिए परमेश्वर के प्रेम और उनका ध्यान रखने की क्या जबरदस्त गवाही है!

क्या भविष्य में किसी दिन यह संभव है कि कोई हमें यह आज्ञा देगा कि आराधना कैसे करें।

क्या यह संभव है कि उपासना के विषय पर इन तीन यहूदियों के समान हमें मृत्युदण्ड का सामना करना पड़े।

40

आप सही कहते हैं कि मैं खुश हूँ कि हमें कोई आज्ञा देने वाला नहीं है वह बहुत भयानक होता यदि आपको मृत्यु का सामना करना पड़ता जब हमें कोई और आज्ञा देता है कि उपासना कैसे करें।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

41

क्या आप नहीं जानते कि बाइबिल की भविष्यवाणी के अनुसार इतिहास का महानतम संकट हमारे ठीक सामने है? इस अन्तिम संकट का मुख्य विषय उपासना ही है?

42

तीन यहूदियो के समान पृथ्वी के अन्तिम समय में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे ही चुनाव का सामना करना होगा? एक चुनाव जो सदैव के लिए उनके भाग्य का फैसला करेगा!

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

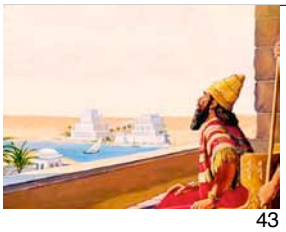
43

बाबुल के शक्तिशाली शासक नबूकदनेस्सर ने एक झूठी मूरत स्थापित की जिसे प्रत्येक व्यक्ति को दण्डवत करना था। वास्तविक विषय आराधना था। मूरत पूजा की मनाही करने वाली दूसरी आज्ञा, सच्चे परमेश्वर की अराधना और झूठे देवताओं की उपासना के बीच वफादारी की जांच थी।

भट्टे को सामान्य से सात गुणा अधिक धधकाया गया था। किसी भी संकट के समय से अधिक संकट का समय था।

जो भी कलीसिया राजा की आज्ञा उल्लंघन करेगी उसको मृत्यु दण्ड दिया जायेगा।

अन्तिम दिनों में, परमेश्वर का वचन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रकट करता है कि एक शक्तिशाली विश्व शासक कलीसिया और राज्य को पुनः एकीकृत करेगा। मुख्य विषय उपासना होगा। पृथ्वी के अन्तिम संकटकाल के समय आज्ञाओं की वफादारी की परिक्षाएँ होंगी जब एक बार फिर एक विश्वव्यापी मृत्यु की घोषणा की जाएगी।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

44

पृथ्वी के रहने वालों के लिए दी गयी सर्वाधिक गंभीर चेतावनी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्ज है। प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर इस संदेश को अति महत्वपूर्ण समझता है, क्योंकि उसने कहा :

45

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : ९)

"जिसके कान हों वह सुने।"

प्रकाशितवाक्य १३ : ९

हमें इस सर्वाधिक आवश्यक संदेश को अवश्य सुनना चाहिए!

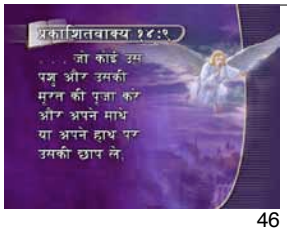

46

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०)

"---जो कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले,

47

तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा भी पियेगा,

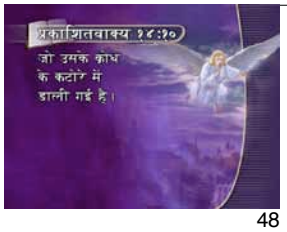

48

जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

49

वह पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०

50

प्रत्येक व्यक्ति को इस भविष्यवाणी का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए और निश्चित कर लेना चाहिए कि उसे पशु या उसकी छाप से कुछ सम्बन्ध नहीं है।

51

बाइबिल की भविष्यवाणी के अनुसार अन्तिम समय में पृथ्वी के वासी दो समूहों में बांटे जायेंगे:
एक वे जो परमेश्वर के प्रतिवफादार होंगे और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और दूसरे वे जो पशु की पूजा करते और उसकी छाप लेते हैं।

52

जो लोग पशु की छाप लेने और उसकी पूजा करने से इन्कार कर देते हैं उन पर अत्यधिक दबाब डाला जाएगा। यह संकट उतना ही गंभीर होगा जितना की तीन यहूदियों को जब नबूकदनेस्सर के सामने खड़े थे और सामना किया था।

53

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७)

"और उसने छोटे -बड़े, धनी -कंगाल, स्वतंत्र सबके दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक एक छाप करा दी,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

54

कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेनदेन न कर सके।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७

55

अन्त में उनके लिए मृत्युदण्ड के लिए एक राजाज्ञा निकाली जायेगी जो पशु और उसकी मूरत की पूजा करने से मना कर देंगे।

56

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १५)

प्रकाशितवाक्य के दूसरे पशु के विषय में बाइबिल कहती है – "और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे

57

और जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें उन्हें मरवा डालें।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १५

58

मनुष्य कहता है, "यदि तुम पशु की पूजा नहीं करोगे, तो न तो हम तुम से कुछ खरीदेंगे और न ही तुम्हारे लिए कुछ बेचेंगे, और अन्त में हम तुम्हें मार डालेंगे।"

59

परमेश्वर कहता है, "यदि तुम पशु की पूजा करोगे तो तुम परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पिओगे।"

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

60

पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के सर्वाधिक कठिन फैसले का सामना करना पड़ेगा जो कभी उन्होंने किए हों।

परमेश्वर के ये निर्णय क्या हैं जो दुष्टों पर उंडेले जाने को हैं?

उत्तर प्रकाशितवाक्य में है :

61

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १५ : १)

"फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा :

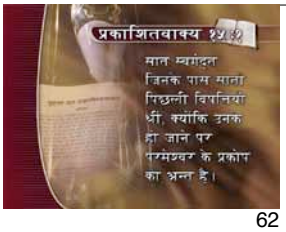

62

सात स्वर्गदूत जिनके पास सातों पिछली विपत्तियाँ थीं, क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है।"

प्रकाशितवाक्य १५ : १

63

अन्तिम सात विपत्तियों में से तीन का निशाना विशेष रुप से पशु और उसके पुजारियों पर है। निश्चय ही परमेश्वर बिना चेतावनी के लोगों को दण्ड की आज्ञा नहीं भेजेगा।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

64

यही वह बात है जो परमेश्वर के बारे में इतनी अद्भुत है!

वह अन्तिम सात विपत्तियाँ मनुष्य जाति पर पहले प्रत्येक को यह जानने का अवसर दिये बिना कि पशु की छाप क्या है और इसे लेने से कैसे बचें, कोई विपत्ति नहीं डालेगा।

65

उसकी अन्तिम चेतावनी संदेश के साथ परमेश्वर भविष्यवाणी को खोलने की चाबी देता है, जिससे कि हम समझ सकें कि यह किसके विषय में है। किसी को भी आने वाले संकट का सामना बिना तैयारी करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि यह पशु शक्ति कौन है? और हम कैसे इस की छाप लेने से बच सकते हैं?

66

आइए हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाई जाने वाली भविष्यवाणी को खोलें और इस पशु शक्ति के विषय में पढ़ें।

67

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १ - ८)

यीशु के चेले यूहन्ना ने लिखा: "तब मैं समुद्र की रेत पर खड़ा हुआ, और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

68

उसके सात सिर और दस सींग थे और उसके सींगो पर दस राज मुकुट थे,

69

और उसके सिरों पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे।

70

जो पशु मैंने देखा वह चीते की नाई था उसके पांव भालू के से थे,

71

और उसका मुँह सिंह का सा था।

72

उस अजगर ने अपनी सामर्थ और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १,२

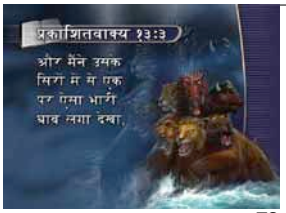

73

"और मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा,

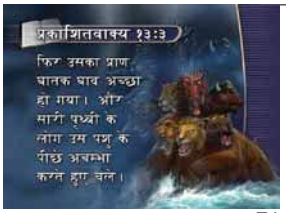

74

फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया। सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे अचम्भा करते हुए चले।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

75

"उन्होंने अजगर की पूजा की जिसने पशु को अपना अधिकार दे दिया;

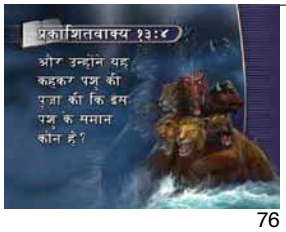

76

और उन्होंने यह कहकर पशु की पूजा की कि इस पशु के समान कौन है?

77

कौन उस से लड़ सकता है?"

78

और बड़े बोलने और निन्दा करने के लिए उसे एक मुँह दिया गया,

79

और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।"

प्रकाशितवाक्य १३ : ३ -५

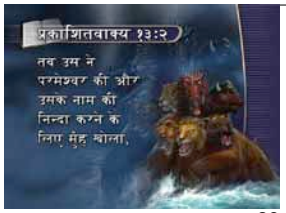

80

"तब उस ने परमेश्वर की और उसके नाम की निन्दा करने के लिए मुँह खोला,

81

और उसके तम्बू और स्वर्ग के रहने वालों की निन्दा करें।"

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

82

उसे यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर विजय पाए।

83

और उसे हर एक कुल, भाषा और जाति पर अधिकार दिया गया।

84

पृथ्वी के वे सब रहने वाले उसकी पूजा करेंगे, जिनके नाम नहीं लिखे गए हैं

85

उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गये, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।"
प्रकाशितवाक्य १३ : ६ -□८

86

हमें इस भविष्यवाणी को एक एक बिन्दु करके देखने की आवश्यकता है। परमेश्वर यहाँ पुनः संसार के लिए उसकी चेतावनी की रुपरेखा बनाने के लिए भविष्य सूचक प्रतीकों का प्रयोग करता है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

87

और पशु किसका प्रतीक है?

दानिय्येल ७ हमें सिखाता है कि पशु राज्यों या शासक शक्तियों का प्रतीक हैं।

यहाँ प्रकाशितवाक्य में हमें वास्तव में कुछ चमत्कारी चित्रण एक संयुक्त पशु जो दानिय्येल के चार महान पशुओं से मिलकर बना है, मिलता है। आपने ऐसा पशु कभी नहीं देखा होगा। दानिय्येल की चारों पशुओं का पुनः अवलोकन शिक्षाप्रद होगा और पशु शक्ति जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, समझने में सहायक होगी।

88

सिंह किसको दर्शाता है? हाँ बाबुल को!

89

रीछ? बिल्कुल ठीक : मादी -फारस।

90

और चीता? यूनान, ठीक।

91

और भयानक दस सींगो वाला पशु? आपको भली प्रकार याद है। हाँ, यह रोमन साम्राज्य को दर्शाता है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

92

प्रकाशितवाक्य १३ एक शक्ति है जो इन चारों महान विश्व साम्राज्यों के बाद आती है हमें अब एक विशेष बात मिलती है पृथ्वी पर केवल एक ही शक्ति है जिसमें भविष्यवाणी में बताये गए सब गुण पाए जाते हैं। पवित्रशास्त्र और लौकिक इतिहास पहचान को निश्चित करता है। पशु के बारे में बोलते हुए, यूहन्ना ने लिखा,

93

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : २)

"अजगर ने अपनी सामर्थ और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया।"

प्रकाशितवाक्य १३ : २

हम पाते हैं कि अजगर शैतान का प्रतीक है क्योंकि बाइबिल कहती है,

94

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : ७ -९)

"और स्वर्ग में लड़ाई हुई ----

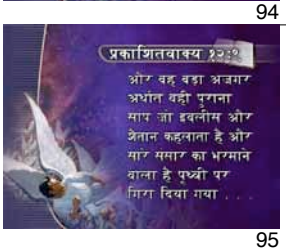

95

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमाने वाला है पृथ्वी पर गिरा दिया गया ---"

प्रकाशितवाक्य १२ : ७ -९

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

96

वास्तव में शैतान कभी भी प्रत्यक्ष रूप से लड़ाई में कदम नहीं रखता वह छल से पर्दे के पीछे से दूसरे व्यक्तियों द्वारा शक्तियों और लोगों द्वारा कार्य करवाता है।

प्रकाशितवाक्य शैतान और कलीसिया के बीच राक्षस तुल्य संघर्ष का चित्रण करता है:

97

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : ३ -५)

"और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर,

98

जिसके सात सिर और दस सींग थे और उसके सिरों पर सात राज मुकुट थे -----

99

और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी खड़ा हुआ था,

100

कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।

101

और वह एक बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था :

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

102

और उसका बच्चा परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।"
प्रकाशितवाक्य १२ : ३ -५

103

यह पुरूष बालक कौन है?
उत्तर है यीशु मसीह !
पर्दे के पीछे से अजगर या शैतान एक विश्व के द्वारा यीशु को नाश करने के लिए उदण्डता से प्रयासरत दिखाई देता है। ठीक ऐसा ही हुआ। मसीह के जन्म के समय शैतान किस राष्ट्र के द्वारा कार्य कर रहा था?

104

लौकिक इतिहास के पन्ने पलटने पर हम पाते हैं कि कैसर के अधीन मूर्तिपूजक रोम मसीह के जन्म के समय शासन कर रहा था।

105

जब यीशु पैदा हुआ तो हेरोदेश ने यीशु को मारने के प्रयास में बैतलहम में दो वर्ष तक के नर बालकों को मार डालने के लिए राजाज्ञा निकाली।

106

रोमी राज्यपाल पोन्तुस पीलातुस ने मसीह को मृत्युदण्ड दिया।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

107

रोमी सिपाहियों ने क्रूस पर ठोंका, और उसकी कब्र पर रोमी मुहर लगाई गयी। शैतान ने यीशु को नाश करने के लिए मूर्तिपूजक का काम रोम के द्वारा काम किया।

108

यीशु जी उठे और स्वर्ग पर ठीक उसी तरह उठा लिये गये जैसे कि भविष्यवाणी ने घोषणा की थी। क्या यह बाइबिल भविष्यवाणी आप में विश्वास को बढ़ाती है?

109

भविष्यवाणी ने आगे बताया कि यह शक्ति मूर्तिपूजक रोम

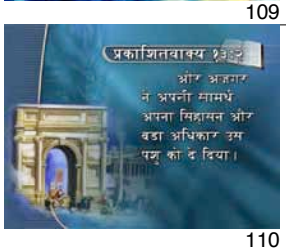

110

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : २)

अपना सामर्थ, अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार पशु को दे देगा।

क्या मूर्तिपूजक रोम ने इस भविष्यवाणी को पूरा किया?

यदि हाँ, तो यह किसको दिया गया?

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

111

अनेक शताब्दियों तक रोमी कलीसिया ने रोम नगर पर अपना अधिकार प्रमाणित करने के लिए एक प्रमाण पत्र का प्रयोग किया जिसका शीर्षक था, 'कान्सटेनटाइन का दान'। इस प्रमाण पत्र ने, जो बाद में झूठा साबित हुआ, उन्हें पश्चिमी रोम पर राजनीतिक और धार्मिक दोनों ही रूप में शासन करने का अधिकार दे दिया। इस प्रमाण पत्र को आधार बनाकर राज्य के रूप में उनकी शक्ति को और पोप को उनका राजा स्थापित किया गया।

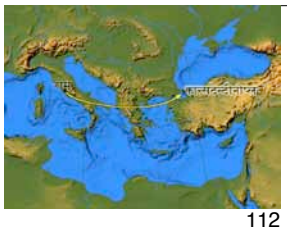
112

३०० ईसवी में कान्सटेन्टाइन अपनी राजधानी बाइजान्टीयम ले गया और इसका नाम अपने सम्मान में कान्सटेन्टीनोप्ल बदल दिया।

113

जब कान्सटेन्टाइन ने रोम छोड़ा तो उसने अपना सिंहासन रोम के बिशप को दे दिया।
रोम का बिशप कलीसिया का मुखिया होने के साथ
-साथ सिंहासन पर राजा भी हो गया।
कलीसिया और राज्य का एक संघ बना और
कलीसिया राज्य पर शासन करने लगी।

114

वैटीकन सिटी रोम के बीच में है जो पुराने रोमन साम्राज्य का केन्द्र था।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

115

रोमन कलीसिया आज भी न केवल धार्मिक शक्ति किन्तु एक राजनीतिक शक्ति के रूप में भी वहीं बना हुआ है। संसार का लगभग
प्रत्येक देश वेटीकन को राजदूत भेजता है।

116

यह बात दिमाग में रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि भविष्यवाणी एक संस्था या धर्म विज्ञान की पद्धति के विषय में चर्चा कर रही है। यह किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना नहीं कर रही है!

117

बहुत बड़ी संख्या में सच्चे लोग है जो परमेश्वर की उपासना करते हैं किन्तु अभी तक जो आप बाइबिल भविष्यवाणी से इस शक्ति के बारे में आज सीख रहे हैं नहीं जानते हैं।

118

प्रकाशितवाक्य १३ में पशु शक्ति की पहचान चिन्हों का ध्यान पूर्वक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह वही शक्ति है जिसे दानिय्येल ७ में छोटे सींग से बोध कराया गया था जिसे हम पहले ही देख चुके हैं।

119

यूहन्ना भविष्यवक्ता ने कहा इस पशु शक्ति को एक भेद करने वाली छाप होगी जिसे यह प्रत्येक के ऊपर बलपूर्वक लगाने का प्रयास करेगा !

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

120

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७)

"उसने छोटे और बड़े, धनी और कंगाल, स्वतन्त्र और दास सब के दाहिने हाथ पर उनके माथे पर एक -एक छाप करा दी:

121

कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेन देन न कर सके।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७

122

परमेश्वर के वचन के अनुसार इस छाप को परमेश्वर के शासन के प्रति विद्रोह या भक्तिहीनता का प्रतीक होना चाहिए। बाइबिल दूसरे समूह के विषय स्पष्टता से बताती है जो पशु की छाप नहीं लेगा।

123

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १२)

"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।"

प्रकाशितवाक्य १४ : १२

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

124

कोई गलती न करें, जिसका संसार सामना करेगा वह महान विषय परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता पर केंद्रित होगा।

लोगों का एक समूह पशु की छाप ले लेता है, जबकि दूसरा परमेश्वर की सब आज्ञाओं का पालन करते हुए और यीशु में विश्वास बनाए रखते हुए परमेश्वर के प्रति सच्चे और वफादार है।

125

परमेश्वर के लोग भी एक छाप लेंगे किन्तु यह परमेश्वर की छाप परमेश्वर की मुहर होगी।

126

यह उसके अनुयायियों के माथे पर लगायी जाएगी।

127

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ७ : २,३)

"फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को जीविते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते हुए देखा :

128

उसने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

129

पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना,

130

जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें।"

प्रकाशितवाक्य ७ : २, ३

131

मैं वह मुहर चाहता हूँ, क्या आप नहीं ? उससे बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है विश्व इतिहास का अन्तिम संघर्ष परमेश्वर की मुहर या पशु की छाप को लेकर है। यह परमेश्वर के चिन्ह और झूठे चिन्ह के बीच है। जब हम परमेश्वर की मुहर या छाप खोज लेते हैं तो झूठी छाप को खोजना आसान होगा जो कि पशु शक्ति द्वारा लगाई जाएगी। परमेश्वर बताता है कि उसका चिन्ह या मुहर क्या है?

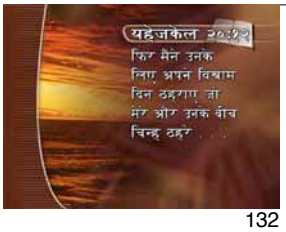

132

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : १२)

"फिर मैंने उनके लिए अपने विश्राम दिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरे ----"

यहेजकेल २० : १२

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

133

(मूलपाठ : निर्गमन ३१ : १३)

परमेश्वर कहता है, "तू इस्राएलियों से यह भी कहना कि निश्चय तुम मेरे विश्राम दिनों को मानना,

134

क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी -पीढ़ी में और मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है,

135

जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करने हारा है।"

निर्गमन ३१ : १३

136

परमेश्वर ने कहा कि सब्त उसके अधिकार का चिन्ह या छाप है। पशु शक्ति क्या कहती है कि इसके अधिकार की छाप क्या है?

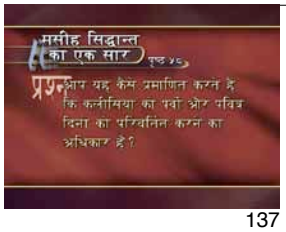

137

निम्नलिखित कथन कैथोलिक केटेक्जिम से लिया गया है :

प्रश्नः– कैसे आप यह प्रमाणित करते हैं कि कलीसिया को पर्वो और पवित्र दिनों को परिवर्तित करने का अधिकार है?

138

उत्तरः– "सब्त को रविवार में बदल डालने को प्रोटेस्टेंट ने मंजूर किया : जिससे उन्होंने यह आसानी से किया

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

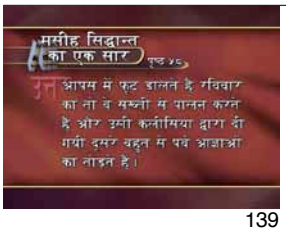

139

आपस में फूट डालते है रविवार का तो वे सख्ती से पालन करते हैं और उसी कलीसिया द्वारा दी गयी दूसरे बहुत से पर्व आज्ञाओं को तोड़ते हैं।

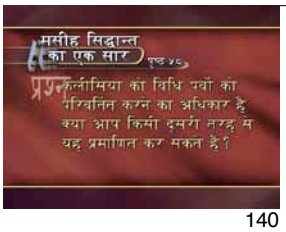

140

प्रश्नः - क्या आप किसी दूसरी तरह से यह प्रमाणित कर सकते हैं कि कलीसिया को पर्वो और पवित्र दिनों को परिवर्तित करने का अधिकार है?

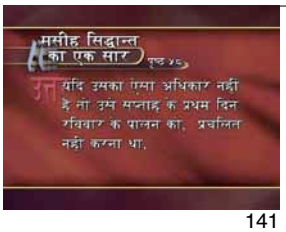

141

उत्तर

"यदि उसका ऐसा अधिकार नहीं है तो उसे सप्ताह के प्रथम दिन रविवार के पालन को,

प्रचलित नहीं करना था,

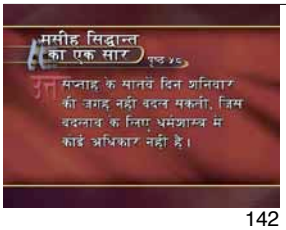

142

सप्ताह के सातवें दिन शनिवार की जगह नहीं बदल सकती, जिस बदलाव के लिए धर्मशास्त्र में कोई अधिकार नहीं है।"

- मसीह सिद्धान्त का एक सार, हेनरी टयूबरविले पृष्ठ ५८

143

उसकी अपनी साक्षी के अनुसार रविवार रोमन कलीसिया के धार्मिक अधिकार की छाप है।

वह स्वयं स्वीकार करती है कि उसने उपासना के दिन को शनिवार से रविवार में बदला और आगे,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

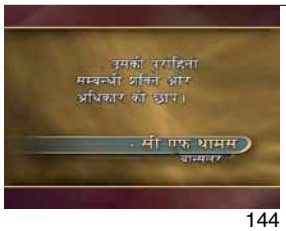

144

"वो कहती है कि यह बदलाहट उसकी शक्ति और अधिकार का चिन्ह है।"

(२८ अक्टूबर, १८९५ में कार्डिनल गिब्बन्स को चान्सलर सी एफ. थामस का पत्र,)

रोमी कलीसिया प्रोटेस्टेंट कलीसियाँ को यह बताने की चुनौती देती है कि उन्होंने परमेश्वर के पवित्र दिन को क्यो अपवित्र किया है?

145

(दृश्य)

क्यों बाईबिल के सब्त को छोड़ कर उस दिन को मानने लगे जिसकी स्थापना,

146

(दृश्य)

प्रथाएं, परम्परा और रोमी कलीसिया द्वारा बदले दिन को मानते है।

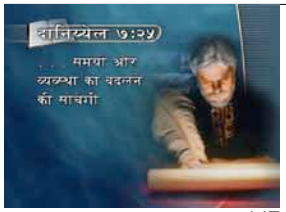

147

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)

दानिय्येल ने बताया कि यह पशु शक्ति

"---समयों और व्यवस्था को बदलने की सोचेगी --"

दानिय्येल ७ : २५

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

148

(मूलपाठ : दानिय्येल ८ : १२)

उसने यह भी बताया कि यह शक्ति "उसने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया और वह यह काम करते करते सफल हो गया।"

दानिय्येल ८ : १२

149

यूहन्ना ने बताया कि शैतान प्रत्येक को पशु की छाप लेने के लिए विवश करेगा:

150

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७)

"उसने छोटे और बड़े, धनी और कंगाल, दास और स्वतंत्र सबके दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक छाप करवा दी,

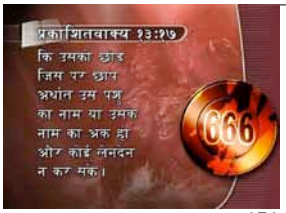

151

कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेन देन न कर सके।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

152

यह शक्ति इस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए अन्त समय में राजनीतिक सरकारों का प्रयोग करके अपने अधिकार की छाप को प्रत्येक के ऊपर लगाने का प्रयास करेगी।

ध्यान दीजिए परमेश्वर कितनी स्पष्टता से इस शक्ति की पहचान करवाता है:

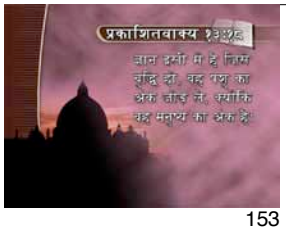

153

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १८)

"ज्ञान इसी में है जिसे बुद्धि हो, वह पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है:

154

उसका अंक ६६६ है।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १८

155

आप पूछेंगें "पशु के अंक का अर्थ क्या है?"

अनेक लोग यह प्रश्न पूछ चुके हैं।

156

हम कैथोलिक कलीसिया को उत्तर देने देंगे। कैथोलिक कलीसिया की राजकीय भाषा लैटिन है कैथोलिक धर्म विज्ञान में पोप सम्पूर्ण कलीसिया का प्रतीक है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

157

पोप की पदवियों में से एक बताई जाती है विकेरियस फिली डी जिसका अर्थ है "परमेश्वर के पुत्र के स्थान पर"

158

"कैथोलिक मानते हैं कलीसिया जो साक्षात संस्था है तो इसका मुखिया भी साक्षात ही होना चाहिए।"

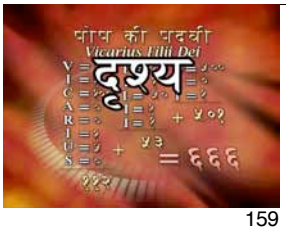

159

(दृश्य)

आप देखेंगे कि लैटिन अक्षरों की सख्या -□सूचक की गणना करना आसान है

विकेरियस ५, १, १००, ०, ०, १, ५० = ११२

फिली ०, १, ५०, १, १ = ५३

डेल ५०००१ = ५०१

= ६६६

यह पहचान का दूसरा स्पष्ट चिन्ह है कि रोम की कलीसिया की पशु शक्ति है।

160

परमेश्वर के वचन की भविष्यवाणियों के अध्ययन से हम क्या निष्कर्ष निकालेंगे? हम देख सकते हैं कि समय आ रहा है, दूर नहीं है, जब परमेश्वर की आज्ञा का सीधा उल्लंघन करते हुए, सभी से सप्ताह के पहले दिन को मानने पर जोर दिया जायेगा।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

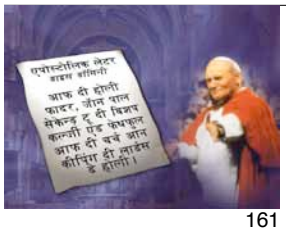

161

हाल में एक निर्देश -पत्र को, जिसका शीर्षक "एपोस्टोलिक लेटर डाइस डामिनी, आफ दी होली फादर, जॉन पाल सेकेन्ड़ टू दी बिशप कल्जी एंड फेथफुल आफ दी चर्च आन कीपिंग दी लार्डस डे होली" है, कलीसिया के अधिकारियों को भेजा गया है यह निर्देश देते हुए कि वे रविवार को उपासना और विश्राम का दिन मानने के लिए दबाव डालें। क्या यह हो सकता है कि यह स्पष्ट उद्देश्य पत्र बाइबिल सब्त के बजाय रविवार पालन के लिए भूमिका तैयार कर रहा है?

162

इसने तो यहां तक सलाह दे डाली कि व इसे वास्तविक बनाने के लिए नागरिक कानून का सहारा लें। क्या यह परिचित लगता है? ठीक वैसा ही जैसा भविष्यवाणी कहती है !

163

एक प्रश्न जो बहुत लोग पूछते हैं कि क्या अभी किसी को पशु की छाप लगी है?

नहीं, अभी तक एक भी व्यक्ति को पशु की छाप नहीं लगी है।

प्रत्येक कलीसिया में परमेश्वर के सच्चे भक्त हैं।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

164

जब नागरिक कानून द्वारा पशु की छाप बलपूर्वक लगायी जाएगी उस समय प्रत्येक को परमेश्वर की आज्ञानुसार सब्त का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की भक्ति, या मनुष्य के बनाए दिन को मान कर पशु की भक्ति, इनमें से एक को चुनना पड़ेगा।

केवल तब ही कोई पशु की छाप लेगा। प्रत्येक आत्मा के समक्ष एक जाँच करने वाली परीक्षा आएगी!

मैं परमेश्वर की आज्ञा पालन करूँ या मनुष्य की? यह केवल दिनों का विषय नहीं है यह स्वामियों का विषय है !

165

(मूलपाठ : रोमियो ६ : १६)

पौलुस ने लिखा: - "क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो,

166

तुम उसी के दास हो जिसकी तुम मानते हो चाहें पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है,

167

या आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है?"

रोमियो ६ : १६

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

168

पृथ्वी के प्रत्येक निवासी को शीघ्र ही एक अत्यधिक गंभीर क्षण का सामना करना होगा।
कोई भी जिस पर पशु की छाप नहीं होगी लेन -देन न कर सकेगा।

169

पहले बहिष्कार होगा, फिर मृत्यु का आदेश। जो पशु की छाप लेंगे उन पर अन्तिम सात विपतियाँ आएंगी।
क्या आपने देखा हैं कि यह विषय इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
यह जीवन और मृत्यु का विषय क्यों है? यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि हम अब परमेश्वर की महिमा करना चुने?

170

उनके लिए अच्छी खबर है जो परमेश्वर का आदर करने और उसकी मुहर लेने का चुनाव करते हैं।

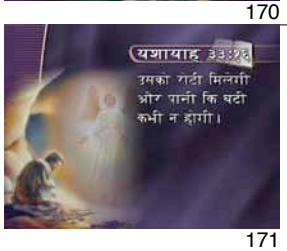

171

(मूलपाठ : यशायाह ३३ : १६)
भले ही वे लेन -देन न कर सकें किन्तु परमेश्वर कहता है, "उसको रोटी मिलेगी और पानी कि घटी कभी न होगी।"
यशायाह ३३ : १६

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

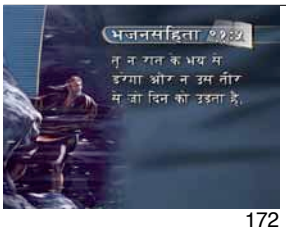

172

(मूलपाठ : भजनसंहिता ९१ : ५ –८)

पृथ्वी पर उड़ेली जाने वाली विपत्तियों के बारे में परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है: "तू न रात के भय से डरेगा और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,

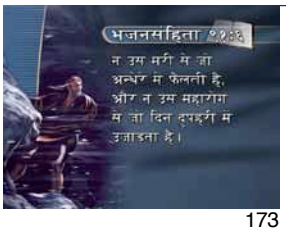

173

न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है।"

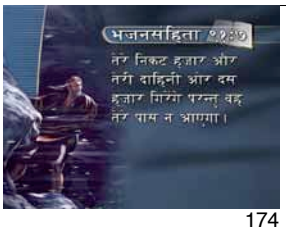

174

तेरे निकट हजार और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे परन्तु वह तेरे पास न आएगा।"

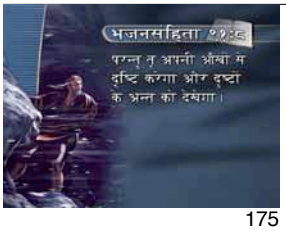

175

"परन्तु तू अपनी आँखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के अन्त को देखेगा।"

भजनसंहिता ९१ : ५ -८

और आप अभी भी सोच सकते हैं कि क्या होगा, बाइबिल कहती है,

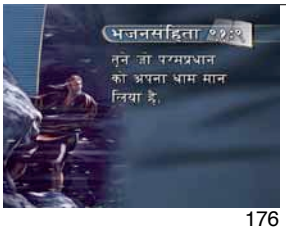

176

(मूलपाठ : भजनसंहिता ९१ : ९ -११)

"तूने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,

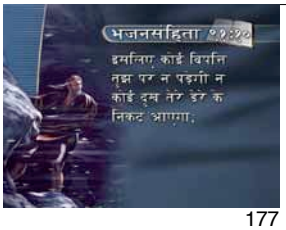

177

इसलिए कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आएगा;

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

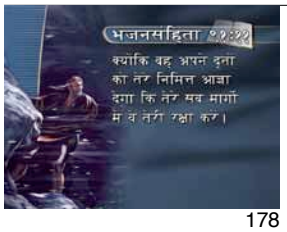

178

क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा कि तेरे सब मार्गों में वे तेरी रक्षा करें।"

भजनसंहिता ९१ : ९ -११

परन्तु परमेश्वर की अद्भुत प्रतिज्ञाएँ उनके लिए ही है जो उसके पीछे चलना चुनते हैं:

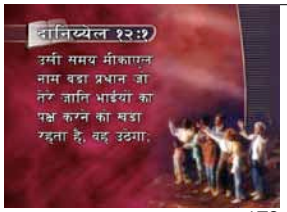

179

(मूलपाठ : दानिय्येल १२ : १)

"उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान जो तेरे जाति भाईयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा।

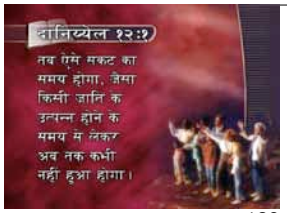

180

तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी नहीं हुआ होगा।

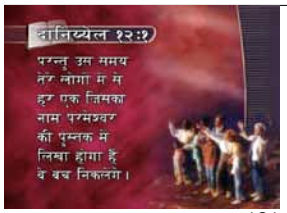

181

परन्तु उस समय तेरे लोगों में से हर एक जिसका नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखा होगा हैं वे बच निकलेंगे।"

दानिय्येल १२ : १

यूहन्ना को उनका दर्शन दिखाया गया जिन्होंने पशु पर जय पायी थी:

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

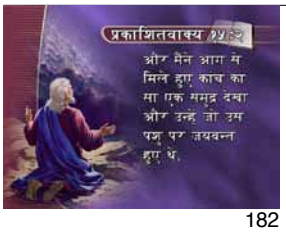

182

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १५ : २)

"और मैंने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा और उन्हें जो उस पशु पर जयवन्त हुए थे,

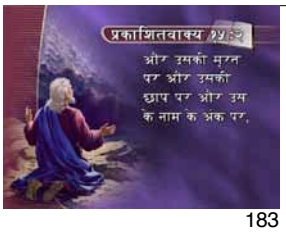

183

और उसकी मूरत पर और उसकी छाप पर और उस के नाम के अंक पर,

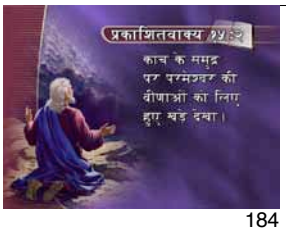

184

कांच के समुद्र पर परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा।"

प्रकाशितवाक्य १५ : २

अभी भी परमेश्वर अपने सच्चे भक्तों से पूरी तरह उसके पीछे चलने के लिए झूठे धार्मिक तन्त्र में से बाहर निकल आने के लिए विनती कर रहा है।

185

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १८ : ४)

"हे मेरे लोगों उस में से निकल आओ कि उसके पापों में भागी न हो,

186

और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।"

प्रकाशितवाक्य १८ : ४

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

187

परमेश्वर के पीछे चलने की कुछ कीमत देनी पड़ती है। याद करिये उन तीन यहूदियों को जिन्होंने मृत्यु की निश्चितता की दशा में भी तर्क किये बिना और कोई समय गवाये बिना, परमेश्वर के लिए निर्णय लिया?

188

परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा द्वारा इन सभाओं के दौरान आप से बोलता रहा है। मरते हुए संसार को वह अन्तिम बार बुला रहा है कि उसके पुत्र के दूसरे आगमन के लिए तैयार हो जायें।

वह उन्हें अपने साथ स्वर्ग ले जाने ले लिए आ रहा है जिन्होंने उसके पीछे चलने फैसला कर लिया है। क्या आप भी उन तीन यहूदियों के समान, परमेश्वर और उसकी सच्चाई के लिए आज रात खड़े होना चाहेंगे?